ISSN0974-0562

शिक्षक–शिक्षा शोध पत्रिका

(SHIKSHAK-SHIKSHA SHODH PATRIKA)

(An International Journal of Teacher-Education)

Volume : 10 Number : 03 Year : 2016

Highly Impact Factor

Research Journal

Chief Editor

Dr. Karunesh Kumar Tewari

Scanned by CamScanner

SHIKSHAK SHIKSHA SHODH PATRIKA

(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF TEACHER EDUCATION)
ISSN.0974-0562

INDEX

Volume:10, Number:03,Month:Jul.-Sept.,Year:2016

SN.	CONTENT	PAGE NO.
1	सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन ; डॉ विवेक नाथ त्रिपाठी त्रिपाठी दुर्गेश कुमार मिश्र	4-18
2	आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की भूमिका ; करुणा अग्रवाल	19-23
3	भारतीय महिलाओं के सशक्तीकरण के परिप्रेक्ष्य में डॉ0 अम्बेडकर का संवैधानिक प्रावधान ; डॉ0 सरफ़राज़ अहमद,	24-26
4 ✓	सूफी दर्शन की मूल्य मीमांसा का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ; डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ✓	27-31
5	एन.सी.एफ. 2005 में विज्ञान की पाठ्यचर्या का स्वरूप ; दिनेश कुमार गुप्ता	32-36
6	श्रीमद्भगवद्गीता एवं शिक्षा ; डॉ0 अनीता सिंह	37-41
7	डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन परिचय और उनके विचार ; डॉ. अनिल कुमार यादव ड़ॉ मनोज कुमार सहायक	42-47
8	राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अवध के किसान आन्दोलन का योगदान ; डॉ0 मनीषा पंडित	48-52
9	रूसो के निषेधात्मक शिक्षा की वर्तमान समय में प्रासंमिकता ; डा0 सत्येन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव	53-58.
10	*Feminism: Gender and Identity Politics.* ; Dr. vishakha srivastav	59-62
11	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उनकी अधिगम शैली व चिन्तन शैली के संदर्भ में अध्ययन ; डॉ विष्णु शर्मा प्रो. शुभा व्यास	63-73
12	गाँधी युगीन राष्ट्रीय स्वदेशी आन्दोलन ; डॉ0 विणा त्रिवेदी	74-81
13	दर्शन और शिक्षा के पारस्परिक सम्बन्ध ; ड़ॉ करूणेश कुमार तिवारी	82-83
14	आमो एवं सिविल विद्यालय क विद्याथिया को सवगात्मक बद्धि व आत्मानमति का तलनात्मक अध्ययन ; डा. गोष्मा शक्ला डा.अलका त्रिपाठो	84-88
15	कौटिल्य के राजनीतिक विचारों का परवर्ती राज्यशास्त्रियों पर प्रभाव ; डॉ0 (श्रीमती) उपमा वर्मा संजय कुमार वर्मा	89-92
16	यायावर :– महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ; डॉ0 पप्पू कुमार	93-95

Scanned by CamScanner

सूफी दर्शन की मूल्य मीमांसा का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

डॉ. गिरधारीलाल शर्मा

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

girdhari1976@gmail.com

PAPER ACCEPTED:25/09/2016

सारांश :– भारत अपनी समृद्ध सभ्यता व संस्कृति के लिए दुनिया भर में अपना विशेष स्थान रखता है। आपसी प्रेम, सद्भाव, धार्मिक सहिष्णुता आदि उच्च मानवीय मूल्य हमारी पहचान रहे हैं। लेकिन वर्तमान में इस मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है। जातिवाद, सम्प्रदायिकता, आतंकवाद, भाषावाद, धार्मिक असहिष्णुता, गुरु–शिष्ट सम्बन्धों में गिरावट जैसी समस्याओं से सम्पूर्ण मानवता त्रस्त नजर आ रही है। इन समस्याओं के समाधान में सूफी दार्शनिक चिन्तन काफी हद तक सहायक हो सकता है। सूफी संतों द्वारा दिए गये मानव प्रेम, करूणा, सहानुभूति, राष्ट्र–प्रेम गुरू की महत्ता, परोपकार, अहंकार का त्याग जैसे संदेश, आज इन्सानियत का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में नवम्बर 2015 में बम्बले (लन्दन) में अपने ऐतिहासिक भाषण में स्वयं कहा कि यदि सूफी विचारधारा को लोगों, विशेषकर मुस्लिमों ने अपनाया होता तो, आज विश्व आतंकवाद की समस्या से नहीं जूझ रहा होता। प्रधानमंत्री द्वारा इतने बड़े मंच पर कही गई यह बात स्वयं सूफी विचारधारा की महत्ता सिद्ध करने को काफी है। प्रस्तुत शोध पत्र में सूफी दर्शन में निहित मूल्यों की वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में समसामयिकता की उल्लेख करने का सूक्ष्म प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना :–

सृष्टि की सर्वोत्तम कृति मानव है, प्रकृति से प्राप्त क्षमताओं के रूप में मानव के पास उसका भावात्मक व बौद्धिक पक्ष है, जिस कारण वह सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है। मानव अपनी शिक्षा के द्वारा विवेक शक्ति को जागृत करता है तथा अपने जीवन को लोकोपयोगी बनाता है। भावात्मक सूत्र में वह हर प्राणी के प्रति करूणाभूत हो जाता है तथा सर्वमंगली भावना से जग को प्लवित करता है। यह क्रम सतत् चलता आ रहा है, किन्तु दुःख की बात यह है कि इस क्रम में कहीं–कहीं वह अहंकार, स्वार्थ तथा कलुषित विचारधारा के कारण अपने मार्ग से भटक गया है। यही कारण है कि हमारे मानवीय मूल्यों का तीव्रता से क्षरण हो रहा है, तथा इस कारण हर प्राणी अस्त, व्यस्त व त्रस्त है।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण समाज में चिन्ता, हताशा, तनाव, व असंतोष दिखाई देता है। घृणा, द्वेष, कटुता, हिंसा तथा वैमनुष्यता चारों तरफ नजर आती हैं। परस्पर प्रेम, भाईचारा, जीवों के प्रति दया, राष्ट्रप्रेम आदि भावनाएं दम तोड़ती नजर आ रही हैं। आधुनिक भारत में शिक्षा व मानवीय मूल्यों के चारों और अन्धी भौतिकता का एक ऐसा चक्र बन गया है, जिसे तोड़ पाना असंभव सा प्रतीत होता है।

यदि हम प्राचीन भारतीय साहित्य में समाज की परिस्थितियों का अवलोकन करें, तो पाते हैं कि वर्तमान जैसी परिस्थितियां समय–समय पर विद्यमान थी किन्तु तत्कालीन विद्वान संत तथा महापुरुषों ने अपने विचारों से समाज का मार्गदर्शन किया। मध्यकाल में मूल्य स्थापना में मानवीय मूल्यों की स्थापना में सूफी विचारधारा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसने व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। सूफी विचारों का प्रचार–प्रसार मुख्यतः मुस्लिम सूफी व संतों ने किया, जिनमें ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, ख्वाजा कुतुबुद्दीन ओलिया आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

Scanned by CamScanner

अतः शोधार्थी का अपना विषयक चिन्तन सूफी दर्शन में निहित मूल्यों की समसामयिकता प्रकट करने का एक लघु प्रयास है।

समस्या का औचित्य :–

वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या व्यक्ति में उत्पन्न अहंभाव की है। सूफी सम्प्रदाय की सभी शिक्षाएं इस अंह का परम में विलीन करने पर बल देती हैं। भारतीय दार्शनिक परम्परा एंव संतों की परम्परा भी–

"परहित सरस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई"

को स्वीकार करती है। सूफीमत भी इसी अवधारणा पर विचार केन्द्रित करता है। अतः शोध छात्र के मन में सूफी साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह विचार उत्पन्न हुआ कि वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में सूफी साहित्य की देन को प्रकट करना आवश्यक हैं। जिससे पाठ्यक्रम निर्माताओं, शिक्षाविदों को लाभ प्राप्त हो सके। वर्तमान समय में सूफीमत पर आधारित शिक्षा से नई पीढ़ी में उच्च मानवीय मूल्यों का विकास किया जा सकता है। ऐसी शोध छात्र की धारणा सूफी साहित्य के विश्लेषण के बाद बनी है।

यही सोचकर शोधार्थी ने अपने अध्ययन व शोध के लिए प्रस्तुत प्रकरण का चयन किया है, वह सूफी साहित्य में निहित मूल्यों से सम्बन्धित है तथा वर्तमान परिप्रेक्ष में प्रासांगिक/समसामयिक भी है।

समस्या से उभरने वाले प्रश्न –

समस्या से शोध छात्र के मन में शोध कार्य हेतु जो जिज्ञासायें उभर कर आई उनसे जुड़े कुछ प्रश्न निम्नलिखित हैं–

1. वास्तव में सूफी दर्शन का स्वरूप क्या है?
2. क्या सूफी दर्शन विभिन्नता में एकता का संदेश देता है?
3. क्या सूफी संतों की वाणी सामाजिक एकीकरण का संदेश देती है?
4. क्या सूफी विचारधारा मानवीय मूल्यों की स्थापना में सहायता सिद्ध हो सकती है?
5. क्या सूफी विचारधारा राष्ट्र को संगठित करने में उपयोगी है?
6. सूफी दर्शन की प्रमुख शिक्षाएं कौन–कौन सी हैं?
7. क्या सूफी दर्शन वर्तमान समय में भी प्रासांगिक है ?

5.शोध के उद्देश्य :–

शोधार्थी द्वारा शोधकार्य हेतु निर्धारित प्रश्नों के आधार पर प्रस्तावित शोधकार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को निश्चित किया गया है :–

1. सूफी दर्शन के स्वरूप को ज्ञात करना।
2. सूफी दर्शन के प्रमुख सिद्धांतों की व्याख्या करना।
3. सूफी दर्शन की मूल्य–मीमांसा प्रस्तुत करना।
4. सूफी दर्शन में सौन्दर्यशास्त्र की मीमांसा करना।
5. सूफी दर्शन में तर्कशास्त्र की मीमांसा करना।
6. सूफी दर्शन में नीतिशास्त्र की मीमांसा करना।
7. सूफी दर्शन के शैक्षिक निहितार्थों को ज्ञात करना।
8. सूफी दर्शन की वर्तमान समय में उपादेयता ज्ञात करना।

Scanned by CamScanner

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखकर शोधकर्त्ता द्वारा 'दार्शनिक शोध विधि' एवं विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

शोध कार्य का परिसीमन :–

शोधार्थी ने अपने शोध कार्य को निम्न बिन्दुओं तक ही सीमित रखा है–

1. सूफी दर्शन का सामान्य परिचय तथा स्वरूप।
2. सूफी दर्शन की तीनों शाखाओं – तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा तथा मूल्य– मीमांसा का परिचय देते हुए, केवल मूल्य–मीमांसा का विस्तृत विवेचन।
3. सूफी दर्शन में प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ तथा उनकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ :–

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन– **"सूफी दर्शन की मूल्य मीमांसा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन"** से अनेक ऐसे तथ्य सामने आये हैं, जिनका यदि वर्तमान में अनुसरण किया जाए तो समाज तथा शिक्षा में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो सकते हैं। यथा–

1.सूफी दर्शन में **ईश्वर के प्रति प्रेम** का संदेश है। वर्तमान में कलुषित होते विचारों, अनैतिक कार्यों में बढ़ती प्रवृत्ति को रोकने में यह संदेश अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

2.सूफी दर्शन में कहा गया है कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान है, अतः **आपस में प्रेम भाव** से रहना चाहिये। वर्तमान में यदि इस शिक्षा का अनुसरण किया जाए, तो लगभग सभी समस्याएँ स्वतः हल हो जाएंगी क्योंकि आज इन्सान ही इन्सान का सबसे बड़ा शत्रु है।

3.सूफी दर्शन में **गुरू के प्रति असीम श्रद्धा** का संदेश है। वर्तमान में गुरू– शिष्य सम्बन्ध विकृत होते जा रहे हैं तथा स्वार्थवृत्ति पर आधारित हो गये हैं। अतः हमारे विद्यार्थियों को इस संदेश का अनुसरण करना चाहिये, कि वे गुरू को वही स्थान दें, जो भारतीय संस्कृति की परम्परा है। वहीं, गुरू को भी अपने स्तर को उच्च करना चाहियें।

4.सूफी दर्शन में **धार्मिक सहिष्णुता** की शिक्षा प्रदान की गई है। आज हम देखते है कि धर्म के नाम पर भेद–भाव तथा कटुता बढ़ती जा रही है जो समाज के विकास में बहुत बड़ी बाधक है। हमें हमारे विद्यार्थियों को सभी धर्मों के प्रति समभाव की प्रवृति को प्रारम्भ से ही विकसित करना चाहिए।

5.सूफी दर्शन में भौतिक इच्छाओं की प्रवृति को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक माना गया है। वास्तव में आज इन्सान की समस्त समस्याओं तथा दुःखों का कारण उसकी बढ़ती हुई भौतिक इच्छाएँ ही हैं। यदि इन **इच्छाओं पर नियंत्रण** किया जाए तो व्यक्ति सुख से जीवन व्यतीत कर सकता है।

6.सूफी दर्शन में **मानव सेवा या परोपकार** की भावना की शिक्षा दी गई है, जो वर्तमान भौतिकवादी युग में अत्यंत उपायदेय है क्योंकि आज व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए गरीबों, कमजोरों, बच्चों, स्त्रियों का शोषण कर रहा है, जिससे समाज का नैतिक स्तर गिर रहा है और हम पतन की और जा रहे हैं।

7.सूफी दर्शन में **विद्यार्थियों को राजनीति से परहेज** का संदेश है। वर्तमान में हम देखते हैं कि महाविद्यालयों में विद्यार्थी, अपनी पढ़ाई से ध्यान हटाकर अनर्गल राजनीति में फंस जाते हैं तथा अपना भविष्य खराब कर लेते हैं। अतः सूफी दर्शन की यह शिक्षा विद्यार्थियों को अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

Scanned by CamScanner

8.सूफी दर्शन में **सादा तथा संयमपूर्ण जीवन** की शिक्षा दी गई है, जो वर्तमान समय में अत्यंत प्रांसगिक है। आज हमारा युवा वर्ग खान–पान, पहनावा, आचार–विचार में पूर्णतया पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रहा है, खुलापन हावी होने से निरंतर चारित्रिक गिरावट आ रही है और हम निरंतर पतन की और जा रहे हैं। अतः हमें सुफियों की सादा तथा संयमपूर्ण जीवन की शिक्षा को अपनाने की महती आवश्यकता है, तभी हम अपनी भारतीय संस्कृति को बचा पाएँगे।

9.सूफी दर्शन में **संगीत को ईश्वर प्राप्ति की राह में एक साधन** माना गया है। वास्तव में यदि संगीत सात्विक, मंद तथा मधुर हो तो वह मन–मष्तिष्क को अत्यधिक सुकुन देता है तथा मन को केन्द्रित करता है। लेकिन वर्तमान में प्रचलित फूहड, शोर–शराबे वाले संगीत से बचने कहा गया है जो बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है।

10.सूफी दर्शन में **कर्म पर विश्वास** की शिक्षा दी गई है। आज हम देखते हैं कि बहुत से युवा छोटी सी असफलता के बाद, भाग्य के भरोसे सब कुछ छोड़कर कर्म करना ही बंद कर देते हैं। यहां उनकों निरंतर कार्यशील बने रहने को कहा गया है, और सत्य भी है परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता हैं।

11.सूफी दर्शन में **सांसारिक ज्ञान के साथ–साथ आध्यात्मिक ज्ञान** प्राप्ति पर भी बल दिया गया है। यदि हम आगामी पीढ़ीयों को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत हस्तांरित करना चाहते है तो हमे अपने बच्चों/विद्यार्थियों को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करना ही होगा।

12.सूफी दर्शन मे ईश्वर के प्रति प्रेम के साथ–साथ **सामाजिक दायित्व निर्वहन** का संदेश भी दिया गया है। माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति दायित्व, परिवार के मुखिया का परिवार के प्रति दायित्व, प्रत्येक व्यक्ति का समाज के प्रति दायित्व तथा इन्सान का इन्सान के प्रति जो दायित्व है, उसका निर्वाह करना चाहिये जो कि आमतौर पर आज नजर नहीं आता।

13.सूफी दर्शन की प्रमुख शिक्षाओं में एक है–**राष्ट्र के प्रति प्रेम**। वर्तमान में इस भावना में कमीं होती जा रही है जो निश्चित ही राष्ट्र की उन्नति में बाधक है। अधिकांश युवा देश की रक्षा हेतु सेना में भर्ती न होकर अन्य व्यवसाय करना पंसद करते हैं। देश के विकास के लिए आज यह नितांत आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करे।

14.सूफी दर्शन में **वसुधैव–कुटुम्बमकम** की भावना विकसित करने का संदेश है जो वर्तमान परिस्थितियों की सबसे बड़ी मांग है। आज व्यक्ति 'मैं' भावना तथा कलुषित स्वार्थवृत्ति का शिकार है जो समाज के स्वस्थ विकास में बाधक है। अतः यह आवश्यक है कि माता–पिता अपने बच्चों तथा शिक्षक विद्यार्थियों में वसुधैव–कुटुम्बमकम की भावना विकसित करें।

15.सूफी दर्शन में ईश्वर प्राप्ति हेतु **जीवन में पवित्रता** अपनाने पर बल दिया है। शारीरिक पवित्रता के साथ–साथ आत्मिक पवित्रता भी आवश्यक बताई गयी है। आज हम सभी शारीरिक पवित्रता का तो ध्यान रखते हैं, लेकिन आत्मिक पवित्रता अर्थात् हृदय की शुद्धता पर ध्यान नहीं देते। हमारे हृदयों में राग–द्वेष, कटुता, स्वार्थवृत्ति, घृणा आदि कुप्रवृत्तियाँ भरी हैं जो हमारे नैतिक पतन का कारण बनती हैं, अतः हमें इन कुप्रवृत्तियों को अपने हृदय से दूर रखना चाहिये, तभी व्यक्ति 'पूर्ण मानव' बन सकता है।

Scanned by CamScanner

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आज जबकि सम्पूर्ण राष्ट्र अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है, जैसे–सम्प्रदायवाद, आतंकवाद, जातिवाद, ऊँच–नीच, बाह्य आडम्बर, भ्रष्टाचार, मानव शोषण, नैतिक पतन; ऐसे विषम वातावरण में एक बार फिर देश को सूफी एवं भक्ति आन्दोलन की आवश्यकता मध्यकाल से अधिक है। यद्यपि सूफी संत आज फना हो चुके हैं, किन्तु उनके विचार, उनके उपदेश अभी तक जीवित हैं तथा सदैव सत्य के खोजकों का मार्ग निर्देशित करते रहेंगे। उनके कार्य व प्रभाव को शताब्दियाँ बीत जाने के बाद भी विस्मृत नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनकी शिक्षा किसी काल विशेष के लिए थी बल्कि हर युग, हर दौर में समानरूपेण महत्वपूर्ण थी और रहेंगी। आज के वातावरण में, जबकि साम्प्रदायिकता सिर उठा रही है, इन सूफियों का जीवन दर्शन साम्प्रदायिक सौहार्द्ध का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। सूफी संतो की मजारों पर जाकर आज भी ऐसा लगता है कि हम एक ही ईश्वर की संतान है; न कोई हिन्दू है न मुस्लिम। आज भी हम सब मिलकर कहें एवं करें–

"तमन्ना दर्दे दिल दिल की हो तो करें,
नहीं मिलते ये गौहर, बादशाह के खजानों में।।"

वर्तमान में जब हम सूफी परम्परा को विस्तृत कर चुके हैं, प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा शोधार्थी ने लोगों के हृदय में उस सूफीमत एवं उनके प्रेम की मशाल को पुनः एक बार जलाने का प्रयास किया है जो समय के प्रभाव से बुझ सी गई है। साथ ही जिस आग के बुझ जाने के कारण मानवता राख बन गई, उस राख के ढ़ेर में जो चिनगारियाँ छिपी हुई हैं, उनको कुरेदकर और हवा देकर पुनः हृदय की मशाल को प्रज्जवलित करने तथा सूफियाना गतिविधियों से जनसामान्य के मन में ज्ञान, कर्म की जोत जलाने का एक प्रयास किया गया है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सूफियाना गतिविधि रूपी किश्ती जो उसके चालकों की दोषपूर्णता व लापरवाही के कारण महासागरों में डूबती जा रही है, ईश्वरीय कृपा व सूफीसंतों के आशीर्वाद से पुनः सतह पर आ जाए और किनारे जा लगे।

"अजब क्या है कि फिर डूबा बेड़ा उछल आये।
कि हमने इंकलाब–चर्ख–ए गिर दूं यूं भी देखा हैं।।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चतुर्वेदी, परशुराम, (2007) "सूफी काव्य संग्रह", हिन्दी साहित्य सम्मेलन–प्रयाग
2. दिनकर, रामधारी सिंह, (1998) : "संस्कृति के चार अध्याय" लोकभारतीय प्रकाशन–इलाहाबाद
3. दिनेश, रामगोपाल शर्मा (1995) : "हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
4. नरेन्द्र : "हिन्दी साहित्य का इतिहास" प्रकाशन संस्थान–नई दिल्ली, 2003
5. नागौरी, एस. एल., (1997) : "भारतीय संस्कृति का वृहद इतिहास पोन्टर्स पब्लिसर्स, जयपुर
6. नागौरी, एस. एल. (1996) : "प्राचीन भारतीय चिन्तन का इतिहास" नेशनल पब्लिसिंग हाउस, जयपुर
7. वर्मा, रामकुमार, (1948) : "हिन्दी साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
8. सिंह, हरदेव : "भारतीय इतिहास तथा साहित्य में सूफी दर्शन" उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

Scanned by CamScanner